

הַתתתתתתתתתתתתתתתתתתתתתתתתתתתתת

Song Book- Class V

Alankar:- Different patterns of Swar

सारेसा, रेगरे, गमग, मपम, पधप, धनिध, निसांनि, सारेंसां सारेसां, निसांनि, धनिध, पधप, मपम, गमग, रेगरे, सारेसा

Tal:- Tal measures music

तालसूलताल

मात्रा — 10; विभाग—5; ताली—3 (प्रथम, चौथी और सातवीं मात्रा पर); खाली — 2 (तीसरी और नौवीं मात्रा पर)

ठेका –धा धा । दिं ता । तिटे धा । तिटे कत । गदि गन

2 3 0

राग-काफ़ी

थाट— काफ़ी, जाति— संपूर्ण, स्वर— गांधार व निषाद बाकी सारे स्वर शुद्ध वादी स्वर—पंचम, संवादी स्वर—षडज, गायन समय—मध्य रात्रि

> आरोह— सा रे, <u>ग</u>, म, प, ध <u>नि</u> सां अवरोह— सां <u>नि</u> ध, प म <u>ग</u>,रे, सा पकड़— सा सा, रे रे, <u>ग</u> ग॒, म म, प

श्लोक

या कुन्देन्दु तुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता।
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना।।
या ब्रह्माच्युतशंकरप्रभृतिभिर्देवैः सदावन्दिता।
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा।।

PAGE NO. 2 CLASS-II SONG BOOK

הַתתתתתתתתתתתתתתתתתתתתתתתתתתתת<u>ת</u>

Meaning:- The one who is dazzling white as the kunda flowers, snow and garlands, the one who is robed in bright white clothes, who is on the white lotus, who is worshipped eternally by Brahma, Vishnu and the like. May that Saraswati, the dispeller of all dull headedness, protect me.

Prayer Song

1. तू प्यार का सागर है, तू प्यार का सागर है,तेरी इक बूँद के प्यासे हम, तेरी इक बूँद के प्यासे हम, तेरी इक बूँद के प्यासे हम,

लौटा जो दिया तुमने, लौटा जो दिया तुमने,चले जाएंगे जहाँ से हम, चले जाएंगे जहाँ से हम

तू प्यार का सागर है, तू प्यार का सागर है,तेरी इक बूँद के प्यासे हम, तेरी इक बूँद के प्यासे हम,

तू प्यार का सागर है,

घायल मन का पागल पंछी उड़ने को बेकरार, उड़ने को बेकरार, पंख है कोमल,आँख है धुँधली,

जाना है सागर पार,

जाना है सागर पार, अब तू ही इसे समझा, अब तू ही इसे समझा, राह भूले थे कहाँ से हम, राह भूले थे कहाँ से हम

तू प्यार का सागर है, तू प्यार का सागर है,तेरी इक बूँद के प्यासे हम, तेरी इक बूँद के प्यासे हम,

तू प्यार का सागर है,

इधर झूम के गाए जिंदगी,उधर है मौत खड़ी, कोई क्या जाने कहाँ है सीमा, उलझन आन

उलझन आन पड़ी, कानों में जरा कह दे, कि आए कौन दिशा से हम । तू प्यार का सागर है, तू प्यार का सागर है,तेरी इक बूँद के प्यासे हम, तेरी इक बूँद के प्यासे हम,

तू प्यार का सागर है,

PAGE NO. 3 CLASS-II SONG BOOK

2. The world stands in need of liberation my Lord,

It still has to feel your power

The blind and the deaf, the dumb and the maimed

All need to feel your heeling touch

The world stands in need of liberation my Lord

It has to learn to love

There are those who have eyes but refuse to see

The inhumanity that is done

There are those who have ears but refuse to hear

The cries of those in agony

There are those who have mouth but refuse to speak

Against injustice done to some

There are those who have hands but refuse to reach

Them out in love and charity.

3 ओ कृष्णा, ओ अल्लाह ओ जीसस् वाहेगुरु,
हम सबके मन में है तन में है तू ही तू।
सीने में गंगा का प्यार है, हिमालय के जैसा दुलार है,
हम तेरी धरती के फूल है, हम सब में है तुम्हारा लहू।
फूलों में कलियों में तू ही तू है। सृष्टि के हर कण में शामिल भी है।
आकाश से रस धरा तक है तू, साँसों में श्रद्धा की राहों में......

PAGE NO. 4 CLASS-II SONG BOOK

ANALIA AN

देशभिक्त गीत

1 हिमाद्रि तुंग श्रृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती स्वयं प्रभा समुज्जवला; स्वतंत्रता प्रकारती अमर्त्य वीर पुत्र हो दृढ़ प्रतिज्ञ सोच लो प्रशस्त पुण्य पंथ है, बढ़े चलो - 2 असंख्य कीर्ति रश्मियाँ विकीर्ण दिव्य दाह सी सपृत मातुभूमि के रूको न शूर साहसी अराति सैन्य सिंधु में, सुवाडवाग्नि से जलो प्रवीर हो जयी बनो, बढो चलो - 2

> 2 सौ में सत्तर आदमी फिलहाल जब नासाज है दिल पे रख कर हाथ कहिए देश क्या आजाद है कोठियों से मुल्क की मईयार को मत आंकिए असली हिन्दुस्तान तो बस गाँव मे आबाद है मेरे सीने में नहीं तेरे सीने में सहीं हो कहीं भी आग लेकिन आग जलनी चाहिए सिर्फ हंगामा खडा करना मेरा मकसद नहीं मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए

तक्षशिला गान

उतरे जन-मन के आँगन में ज्ञान किरण उतरे ज्योति कलश सूरज सा छलके प्रभा-पुंज बिखरे सा प्रथमा संस्कृति विश्ववारा

रस रोशनी विनिर्मित संस्कृति भारत की अपनी बन कर यह आलोक पर्व-सा अग-जग में फैले संगच्छध्वं संवदध्वं संवोमनासि जानताम् वस्धैव कूटुम्बकम्। वस्धा ही कुटुम्ब है अपना ऐसा भाव बने जन-मन-के सब भेद मिट और समता प्रेम बढे नव मानव के सूजन यज्ञ के हम ऋत्विज सारे in the transportation of the same transportation

संस्कृति शिल्पी चित्त गढ़ेंगे हम न्यारे—न्यारे
तक्षशिला और नालंदा के वारिस हैं हम
आत्मदीप बनने की प्रेरणा जन—मन में भर दें
ज्ञान दीप्त हो चित्त, हृदय में श्रद्धा सजल भरें
विज्ञानी मस्तिष्क माँगलिक प्रज्ञा वरण करें।

सा विधा या विमुक्तये

मुक्त चित्त की प्रेरक विद्या जग को दान करें सब संस्कृति मानव की संस्कृति ऐसा भाव भरें आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः

श्रद्धा पूरित चित के सारे बंद कपाट खुलें

दिशा— दिशा से सद्विचार के ज्योति विहग उतरें

शुद्ध—बुद्ध हम चिदानंदमय आत्मरूप हम नित्य

विमल शील चारित्र्य धनी हम यह संकल्प करें।

असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय मृत्योंमाऽमृतंगमय।

हम तम पर आलोक विजयका उत्सव मधुर रचें

राष्ट्र प्रेम और विश्व शांति की पावन ऋचा रचें

विद्या भूषित जीवन सबका बने लितत संगीत

सविता तेज सुप्रेरित दर्शन चिंतन दृष्टि रचें

हम भारत के गौरवसारी वसुधा की आशा

विश्व ग्राम के हम अधिवासी हम सबके सब अपने।

वयं राष्ट्र जाग्रयाम प्रोहिताः।

PAGE NO. 6 CLASS-II SONG BOOK